ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

भारतीय लोकतंत्र: संभावनाएं तथा चुनौतियाँ

Dr. Rajkumar Goyal

Lecturer, Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

भारत को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रुप में जाना जाता है, जिस पर सदियों तक विभिन्न राजाओं, सम्राटों तथा यूरोपीय साम्राज्यवादीयों द्वारा शासन किया गया। भारत 1947 में अपनी आजादी के बाद एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया था। उसके बाद भारत के नागरिकों को वोट देने और अपने नेताओं का चुनाव करने का अधिकार मिला।भारत क्षेत्रफल के हिसाब से दुनियां का सातवां सबसे बड़ा देश और आबादी के हिसाब से दूसरा सबसे बड़ा देश है, इन्हीं कारणों से भारत को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रुप में भी जाना जाता है। 1947 में देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ था। हमारे देश में केंद्र और राज्य सरकार का चुनाव करने के लिए हर 5 साल में संसदीय और राज्य विधानसभा चुनाव आयोजित किए जाते हैं। लोकतंत्र को विश्व के सबसे अच्छे शासन प्रणाली के रुप में जाना जाता है। यह देश के प्रत्येक नागरिक को वोट देने और उनकी जाति, रंग, पंथ, धर्म या लिंग के बावजूद अपनी इच्छा से अपने नेताओं का चयन करने की अनुमति प्रदान करता है। हमारे देश में सरकार आम लोगों द्वारा चुनी जाती है और यह कहना गलत नहीं होगा कि यह उनकी बुद्धि और जागरूकता है जिससे वे सरकार की सफलता या विफलता निर्धारित करतें हैं।

परिचय

भारत सहित दुनिया के कई देशों में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली लागू, इसके साथ ही भारत को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रुप में भी जाना जाता है। हमारे देश का लोकतंत्र संप्रभु, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतांत्रिक गणराज्य सहित पांच लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर कार्य करता है। 1947 में अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र घोषित किया गया था। आज के समय में हमारे देश को ना सिर्फ विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रुप में जाना जाता है बल्कि कि इसके साथ ही इसे विश्व के सबसे सफल लोकतंत्रों में से एक लोकतंत्र के रुप में भी जाना जाता है। भारतीय लोकतंत्र का एक संघीय रूप है जिसके अंतर्गत केंद्र में एक सरकार जो संसद के प्रति उत्तरदायी है तथा राज्य के लिए अलग-अलग सरकारें हैं जो उनके विधानसभाओं के लिए समान रूप से जवाबदेह हैं। भारत के कई राज्यों में नियमित अंतराल पर चुनाव आयोजित किए जाते हैं। इन चुनावों में कई पार्टियां केंद्र तथा राज्यों में जीतकर सरकार बनाने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। अक्सर लोगों को सबसे योग्य उम्मीदवार का चुनाव करने के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है लेकिन फिर भी जातीय समीकरण भारतीय राजनीति में भी एक बड़ा कारक है चुनावी प्रक्रियाओं को मुख्य रुप से प्रभावित करते है।

चुनाव प्रचार के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा अभियान चलाया जाता है ताकि लोगों के विकास के लिए उनके भविष्य के एजेंडे पर लाभ के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों पर जोर दिया जा सके।

भारत में लोकतंत्र का मतलब केवल वोट देने का अधिकार ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता को भी सुनिश्चित करना है। हालांकि हमारे देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को विश्वव्यापी प्रशंसा प्राप्त हुई है पर अभी भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जिनमें हमारे लोकतंत्र को सुधार की आवश्यकता है ताकि लोकतंत्र को सही मायनों में परिभाषित किया जा सके। सरकार को लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए निरक्षरता, गरीबी, सांप्रदायिकता, जातिवाद के साथ-साथ लैंगिग भेदभाव को खत्म करने के लिए भी काम करना चाहिए। लोकतंत्र को विश्व के सबसे अच्छे शासन प्रणाली के रुप में जाना जाता है, यही कारण है कि हमारे देश के संविधान निर्माताओं और नेताओं ने शासन प्रणाली के रुप में लोकतांत्रिक व्यवस्था का चयन किया। हमें अपने देश के लोकतंत्र को और भी मजबूत करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र है। मुगलों, मौर्य, ब्रिटिश और अन्य कई

शासकों द्वारा शताब्दियों तक शासित होने के बाद भारत आखिरकार 1947 में आजादी के बाद एक लोकतांत्रिक देश बना। इसके बाद देश के लोगों को, जो कई सालों तक विदेशी शक्तियों के हाथों शोषित हुए, अंत में वोटों के द्वारा अपने स्वयं के नेताओं को चुनने का अधिकार प्राप्त हुआ। भारत में लोकतंत्र केवल अपने नागरिकों को वोट देने का अधिकार प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक समानता के प्रति भी काम कर रहा है।

भारत में लोकतंत्र पांच लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर काम करता है:

- संप्रभु: इसका मतलब भारत किसी भी विदेशी शक्ति के हस्तक्षेप या नियंत्रण से मुक्त है।
- समाजवादी: इसका मतलब है कि सभी नागरिकों को सामाजिक और आर्थिक समानता प्रदान करना।
- धर्मनिरपेक्षता: इसका अर्थ है किसी भी धर्म को अपनाने या सभी को अस्वीकार करने की आजादी।
- लोकतांत्रिक: इसका मतलब है कि भारत सरकार अपने नागरिकों द्वारा चुनी जाती है।
- गणराज्य: इसका मतलब यह है कि देश का प्रमुख एक वंशानुगत राजा या रानी नहीं है।

विचार-विमर्श

18 वर्ष से अधिक आयु का हर भारतीय नागरिक भारत में वोट देने का अधिकार का उपयोग कर सकता है। मतदान का अधिकार प्रदान करने के लिए किसी व्यक्ति की जाति, पंथ, धर्म, लिंग या शिक्षा के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होता है। भारत में कई पार्टियाँ है जिनके उम्मीदवार उनकी तरफ से चुनाव लड़ते हैं जिनमें प्रमुख है भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई), कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया- मार्क्सिस्ट (सीपीआई-एम), अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) आदि। उम्मीदवारों को वोट देने से पहले जनता इन पार्टियों या उनके प्रतिनिधियों के आखिरी कार्यकाल में किये गये कार्यों का मूल्यांकन करते हुए, अपना मतदान करती है। भारतीय लोकतंत्र में सुधार की बहुत गुंजाइश है इसके सुधार के लिए ये कदम उठाए जाने चाहिए:

1. गरीबी उन्मूलन
2. साक्षरता को बढ़ावा देना
3. लोगों को वोट देने के लिए प्रोत्साहित करना
4. लोगों को सही उम्मीदवार चुनने के लिए शिक्षित करना
5. बुद्धिमान और शिक्षित लोगों को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना
6. सांप्रदायिकता का उन्मूलन करना
7. निष्पक्ष और जिम्मेदार मीडिया सुनिश्चित करना
8. निर्वाचित सदस्यों के कामकाज की निगरानी करना
9. लोकसभा तथा विधानसभा में ज़िम्मेदार विपक्ष का निर्माण करना

परिणाम

भारत पर मुगल से मौर्यों तक कई शासकों ने शासन किया। उनमें से प्रत्येक के पास लोगों को शासित करने की अपनी अलग शैली थी। 1947 में अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया था। उस समय के भारत के लोग, जिन्होंने अंग्रेजों के हाथों काफी अत्याचारों का सामना किया था, उन्हें आजादी के बाद पहली बार वोट करने और खुद की सरकार चुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

भारत के लोकतांत्रिक सिद्धांत

संप्रभु

संप्रभु एक ऐसी इकाई को संदर्भित करता है जो किसी भी विदेशी शक्ति के नियंत्रण से मुक्त होता है। भारत के नागरिक अपने मंत्रियों का चुनाव करने के लिए सर्वभौमिक शक्ति का इस्तेमाल करते हैं।

समाजवादी

समाजवादी का मतलब है भारत के सभी नागरिकों को जाति, रंग, पंथ, लिंग और धर्म को नज़रंदाज़ करके सामाजिक और आर्थिक समानता प्रदान करना।

धर्म निरपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि अपनी पसंद से किसी भी धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता। हमारे देश में कोई आधिकारिक धर्म नहीं है।

लोकतांत्रिक

लोकतांत्रिक का मतलब है कि भारत सरकार अपने नागरिकों द्वारा चुनी जाती है। किसी भी भेदभाव के बिना सभी भारतीय नागरिकों को वोट देने का अधिकार दिया गया है ताकि वे अपनी पसंद की सरकार चुन सकें।

गणतंत्र

देश का प्रमुख एक वंशानुगत राजा या रानी नहीं है। वह लोकसभा और राज्यसभा द्वारा चुना जाता है जहाँ के प्रतिनिधि खुद जनता द्वारा चुने गयें हैं।

भारत में लोकतंत्र की कार्यवाही

18 वर्ष से अधिक आयु के भारत के हर नागरिक को वोट देने का अधिकार है। भारत का संविधान किसी से भी अपनी जाति, रंग, पंथ, लिंग, धर्म या शिक्षा के आधार पर भेदभाव नहीं करता है।

भारत में कई पार्टियाँ राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव लड़ती है जिनमें प्रमुख है – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई), कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया- मार्क्सिस्ट (सीपीआई-एम), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा)। इनके अलावा कई क्षेत्रीय पार्टियां हैं जो राज्य विधायिकाओं के लिए चुनाव लड़ती हैं। चुनावों को समय-समय पर आयोजित किया जाता है और लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने के लिए मतदान करने के अपने अधिकार का उपयोग करते हैं। सरकार लगातार अच्छे प्रशासन को चुनने के लिए अधिक से अधिक लोगों को वोट देने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

भारत में लोकतंत्र का मकसद केवल लोगों को वोट देने का अधिकार देने के लिए नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में समानता सुनिश्चित करना भी है।

भारत में लोकतंत्र के कार्य में रुकावटें

हालांकि चुनाव सही समय पर हो रहें हैं और भारत में लोकतंत्र की अवधारणा का एक व्यवस्थित दृष्टिकोण से पालन किया जाता है लेकिन फ़िर भी देश में लोकतंत्र के सुचारु कामकाज में कई बाधाएं हैं। इसमें निरक्षरता, लिंग भेदभाव, गरीबी, सांस्कृतिक असमानता, राजनीतिक प्रभाव, जातिवाद और सांप्रदायिकता शामिल है। ये सभी कारक भारत में लोकतंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

भारतीय लोकतंत्र द्वारा सामना किए जाने वाले चुनौतियां

संविधान एक लोकतांत्रिक राज्य का वादा करता है और भारत के लोगों को सभी प्रकार के अधिकार के प्रदान करता हैं। कई कारक हैं जो भारतीय लोकतंत्र को प्रभावित करने का कार्य करते हैं तथा इसके लिए एक चुनौती बन गए है। इन्ही में से कुछ निम्नलिखित कारको के विषय में नीचे चर्चा की गयी है।

निरक्षरता

लोगों की निरक्षरता सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जो कि भारतीय लोकतंत्र की शुरूआत के बाद से हमेशा सामने आती रही है। शिक्षा लोगों को बुद्धिमानी से वोट देने के अपने अधिकार का उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

गरीबी

गरीब और पिछड़े वर्गों के लोगों से आम तौर पर हमेशा ही राजनीतिक दलों द्वारा छेड़छाड़ की जाती है। राजनीतिक दल उनसे अक्सर वोट प्राप्त करने के लिए रिश्वत तथा अन्य प्रकार के प्रलोभन देते हैं।इनके अलावा, जातिवाद, लिंगभेद, सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरवाद, राजनीतिक हिंसा और भ्रष्टाचार जैसे कई अन्य कारक हैं जो भारत में लोकतंत्र के लिए एक चुनौती बन गये है।

निष्कर्ष

भारत के लोकतंत्र की दुनिया भर में काफी प्रशंसा की जाती है। देश के हर नागरिक को वोट देने का अधिकार उनके जाति, रंग, पंथ, धर्म, लिंग या शिक्षा के आधार पर किसी भी भेदभाव के बिना दिया गया है। देश के विशाल सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता लोकतंत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके साथ ही आज के समय में लोगों के बीच का यह मतभेद एक गंभीर चिंता का कारण बन गया है। भारत में लोकतंत्र के सुचारु कार्य को सुनिश्चित करने के लिए हमें इन विभाजनकारी प्रवृत्तियों को रोकने की आवश्यकता है। हालाँकि भारत लोकतंत्र की विश्व भर में सराहना की जाती है लेकिन अभी भी इसे सुधार का काफी लंबा सफर तय करना है। भारत में लोकतंत्र के कामकाज पर असर डालने वाली अशिक्षा, गरीबी, लैंगिग भेदभाव और सांप्रदायिकता जैसी कारकों को समाप्त करने की आवश्यकता है ताकि देश के नागरिक सही मायनों में लोकतंत्र का आनंद ले सकें।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 7, July 2016

संदर्भ

1. "लोकतंत्र" । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस । 24 फरवरी 2015 को पुनःप्राप्त ।
2. ^ यहां तक जायें: टैंजियन, एंड्रानिक (2015)। लोकतंत्र का विश्लेषणात्मक सिद्धांत: इतिहास, गणित और अनुप्रयोग । पसंद और कल्याण में अध्ययन। चाम, स्विट्जरलैंड: स्प्रिंगर। डीओआई : 10.1007/978-3-030-39691-6 . आईएसबीएन 978-3-030-39690-9. एस 2 सीआईडी 216190330 .
3. ^ "लोकतंत्र की परिभाषा" । www.merriam-webster.com । 5 जुलाई 2015 को पुनःप्राप्त ।
4. ^ लोके, जॉन। सरकार पर दो ग्रंथ: आधुनिक अंग्रेजी में अनुवाद । उद्धरण: "बहुसंख्यक राजनीतिक शासन का कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है - यानी, बहुमत की सहमति को पूरे के कार्य के रूप में लेना और प्रत्येक व्यक्ति को बाध्य करना। सामूहिक रूप से कार्य करने से पहले प्रत्येक व्यक्ति की सहमति प्राप्त करना असंभव होगा। .. कोई भी तर्कसंगत व्यक्ति एक ऐसे समाज की इच्छा और गठन नहीं कर सकता था जिसे सीधे भंग करना पड़ा क्योंकि बहुमत अंतिम निर्णय लेने में असमर्थ था और समाज एक शरीर के रूप में कार्य करने में असमर्थ था। बहुसंख्यक राजनीतिक शासन %E2%80%93 का कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है, यानी बहुमत की सहमति को संपूर्ण के रूप में लेना और प्रत्येक व्यक्ति को बाध्य करना।" Google पुस्तकें ।
5. ^ ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी : "डेमोक्रेसी"।
6. ^यहां तक जायें: वाटकिंस, फ्रेडरिक (1970)। "प्रजातंत्र"। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । वॉल्यूम। 7 (एक्सपो '70 हार्डकवर एड।)। विलियम बेंटन। पीपी। 215-23। आईएसबीएन 978-0-85229-135-1.
7. ^ विल्सन, एनजी (2006)। प्राचीन ग्रीस का विश्वकोश । न्यूयॉर्क: रूटलेज। पी। 511. आईएसबीएन 0-415-97334-1 ।
8. ^ बार्कर, अर्नेस्ट (1906)। "अध्याय VII, धारा 2"। प्लेटो और अरस्तू के राजनीतिक विचार । जीपी Putnam के संस।
9. ^ जार्वी, 2006, पीपी। 218-19
10. ^ एंडरसन, क्रिस्टोफर जे.; बोल, डेमियन; आनंद, ऑरेलिया (2015)। "लोकतंत्र और राजनीतिक नेताओं के बारे में मानवता के दृष्टिकोण" । जनता की राय त्रैमासिक । 85 (4): 957–986। डीओआई : 10.1093/पीओक्यू/एनएफएबी056 । आईएसएसएन 0033-362X । पीएमसी 8754486 । पीएमआईडी 35035302 ।
11. ^ यहां तक जायें: वी-डेम इंस्टीट्यूट डेमोक्रेसी रिपोर्ट 2015: ऑटोक्रेटाइजेशन चेंजिंग नेचर? पीपी। 6, 13, 18: "तानाशाही बढ़ रही है और दुनिया की 70% आबादी - 5.4 बिलियन लोगों को शरण देती है।"
12. ↑ इकोनॉमिक इंटेलिजेंस यूनिट डेमोक्रेसी इंडेक्स, 2015, पी। 4: "लोकतंत्र के हमारे माप के अनुसार, दुनिया की आधी से कम (45.7%) आबादी अब किसी प्रकार के लोकतंत्र में रहती है, 2015 (49.4%) से महत्वपूर्ण गिरावट आई है।"
13. ^ यहां तक जायें: कर्मचारी लेखक (22 अगस्त 2007)। "कुछ के लिए स्वतंत्रता और न्याय" । अर्थशास्त्री । अर्थशास्त्री समूह ।
14. ^ पॉपर, कार्ल (23 अप्रैल 1988)। "खुले समाज और उसके दुश्मनों पर दोबारा गौर", द इकोनॉमिस्ट (2015 पुनर्मुद्रण)।
15. ^ अन्नान, कोफी , " डेमोक्रेसी ", यूरोप की परिषद ।
16. ^ गगनोन, जीन-पॉल (1 जून 2015)। "लोकतंत्र के 2,234 विवरण" । लोकतांत्रिक सिद्धांत । 5 (1): 92–113। डीओआई : 10.3167/दि.2015.050107 । आईएसएसएन 2332-8894 । एस 2 सीआईडी 149825810 .
17. ^ "प्रत्यक्ष लोकतंत्र | परिभाषा, इतिहास और तथ्य | ब्रिटानिका" । www.britannica.com । 2 फरवरी 2015 को पुनःप्राप्त ।
18. ^ डहल, रॉबर्ट ए.; शापिरो, इयान; चीबूब, जोस एंटोनियो (2003)। लोकतंत्र सोर्सबुक । कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: एमआईटी प्रेस। आईएसबीएन 978-0-262-54147-3. विवरण।
19. ^ हेनफ़, मार्सेल; स्ट्रॉन्ग, ट्रेसी बी. (2001). सार्वजनिक स्थान और लोकतंत्र । मिनियापोलिस: मिनेसोटा प्रेस विश्वविद्यालय। आईएसबीएन 978-0-8166-3388-3.
20. ^ किम्बर, रिचर्ड (सितंबर 1989)। "लोकतंत्र पर"। स्कैंडिनेवियाई राजनीतिक अध्ययन । 12 (3): 201, 199–219। डीओआई : 10.1111/जे.1467-9477.1989 .tb00090.x । पूर्ण पाठ। 17 अक्टूबर 2015 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत
21. ^ हीरा, लैरी; मोरलिनो, लियोनार्डो (25 नवंबर 2005)। लोकतंत्र की गुणवत्ता का आकलन । जेएचयू प्रेस। आईएसबीएन 978-0-8018-8287-6- Google पुस्तकें के माध्यम से।